महाविद्यालय

दल प्रणाली (PARTY SYSTEM)

राजनीतिक दलों के आधार

ब्राइस ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक प्रजातंत्र' में लिखा है कि "राजनीतिक दल प्रजातंत्र से कहीं अधिक प्राचीन है" लेकिन इस प्रकार का मत व्यक्त करते हुए ब्राइस के द्वारा प्राचीन समय में स्थापित क्लब, घर, राजनीतिक समाज और संसदीय गोष्ठीयों को राजनीतिक दल मान लिया गया है। आधुनिक समय के राजनीतिक दल वर्तमान युग की ही उपज है और आधुनिक राजनीतिक दलों का विकास जनतंत्र और मताधिकार के साथ-साथ ही हुआ है। राजनीतिक दलों के उद्गम के संबंध में प्रमुख रूप से निम्नलिखित बातों का प्रतिपादन किया जाता है :-

1. मानव स्वभाव का सिद्धांत - मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर राजनीतिक दलों को मानव स्वभाव में निहित मूल प्रवृतियों पर आधारित कहा जाता है। कुछ लोग स्वभाव से ही रूढ़ीवादी होते है और किसी प्रकार का परिवर्तन पसंद नहीं करते है कुछ लोग धीरे-धीरे परिवर्तन चाहते है, और कुछ लोग तुरंत परिवर्तन के पक्ष में होते है।

2. आर्थिक हित और विचार - राजनीतिक दल आर्थिक विचार भेद के भी परिणाम होते है और वर्तमान समय के तो सभी राजनीतिक दल आर्थिक विचारों

पर आधारित है। आर्थर होलकौम्ब ने ठीक ही कहा है कि "राष्ट्रीय दल क्षणिक आवेगों या अस्थाई आवश्यकताओं के आधार पर नहीं चल सकते। उन्हें स्थायी सामुदायिक हितों विशेषता आर्थिक हितों पर आधारित होना चाहिए"।

3. वातावरण संबंधी प्रभाव – सामान्यतया कहा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक संस्कारों के समान ही राजनीतिक संस्कार भी साथ ही लेकर उत्पन्न होता है अपने इन राजनीतिक संस्कारों के आधा पर वह किसी विशेष राजनीतिक दल से संबद्ध होता है। अनेक बार एक व्यक्ति के पारिवारिक सदस्य और उनके मित्र भी उनके लिए राजनीतिक दल का मार्ग खोजते है। लेकिन राजनीतिक चेतना के विकास के साथ-साथ वातावरण संबंधी प्रभाव कम होता जा रहा है।

4. धार्मिक और सम्प्रदायिक भावनाएं – पाश्चात्य देशों के नागरिकों में धार्मिक और संप्रदायिक भावनाएं बहुत अधिक बलवती न होने के कारण धार्मिक और सम्प्रदायिक भावनाओं पर आधारित राजनीतिक दल नही पाए जाते है। किन्तु भारत और पूर्व के कुछ देशों मे इस प्रकार के सम्प्रदायिक दल विद्यमान है।